भारतीय पारंपरिक ज्ञान पत्रिका
खंड 25(10), अक्टूबर 2026, पृ. 1019-1030
DOI: 10.56042/ijtk.v25i10.24908

भारत के असम राज्य के काम रूप एवं बोंगाईगाँव जिलों में पारंपरिक मत्स्याखेट जाल, मत्स्याखेट उपकरण एवं मछली पकड़ने की विधियाँ

पराग सैकिया[क], द्विबन पुजारी[क,*], कपिल देव नाथ[ख] एवं ऋतुपर्णा सैकिया[ग]
[क]कृषि विज्ञान केंद्र, बोंगाईगाँव, असम कृषि विश्वविद्यालय, अभयापुरी 783 384, जिला बोंगाईगाँव, असम, भारत।
[ख]कृषि विज्ञान केंद्र, उदालगुड़ी, असम कृषि विश्वविद्यालय, लालपूल 784 514, असम, भारत।
[ग]कृषि विज्ञान केंद्र, जोरहाट, असम कृषि विश्वविद्यालय, कालीपानी, चांगमईगाँव, टियोक, जोरहाट 785 112, असम, भारत।
[*]ई-मेल: dwiban.pujari2004@gmail.com

प्राप्त 12 नवंबर 2025; संशोधित 02 फरवरी 2026; स्वीकृत 13 अक्टूबर 2026

स्वदेशी मत्स्याखेट उपकरण एवं मछली पकड़ने की पारंपरिक विधियाँ पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण घटक हैं तथा पूर्वोत्तर भारत के असम राज्य में अंतर्देशीय प्राकृतिक मत्स्य संसाधनों के दोहन में आज भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में असम के कामरूप एवं बोंगाईगाँव जिलों के मछुआरा समुदायों द्वारा उपयोग किए जाने वाले स्वदेशी मत्स्याखेट जालों, उपकरणों एवं उन से संबंधित पारंपरिक प्रथाओं का दस्तावेजीकरण और विश्लेषण किया गया, जिसमें उनकी संरचना, संचालन विधि, मत्स्य प्रजातियों के चयनात्मक शिकार तथा सततता पर विशेष ध्यान दिया गया। क्षेत्रीय अध्ययन अप्रैल 2024 से अगस्त 2025 तक 20 गाँवों में किया गया, जिसमें बहुस्तरीय प्रतिचयन पद्धति के माध्यम से चयनित 110 सक्रिय मछुआरा परिवारों को शामिल किया गया। आँकड़ों का संकलन अर्ध-संरचित साक्षात्कारों, प्रत्यक्ष क्षेत्रीय अवलोकनों तथा छाया चित्रों के माध्यम से किया गया। अध्ययन में विभिन्न प्रकार की स्वदेशी मत्स्याखेट तकनीकों का अभिलेखीकरण किया गया, जिनमें बाँस से निर्मित मछली पकड़ने के फंदे, हाथ से संचालित उपकरण, मछलियों को भेदकर पकड़ने वाले उपकरण तथा वस्त्र-आधारितम त्स्याखेट जाल शामिल थे। ये सभी उपकरण नदियों, बीलों, बाढ़-मैदानों तथा जलमग्न धान के खेतों जैसे विशिष्ट जलीय आवासों के अनुरूप विकसित किए गए हैं। अधिकांश उपकरण निष्क्रिय प्रकृति के, हाथ से संचालित तथा विशिष्ट जलीय आवासों के अनुकूल पाए गए, जो उनकी चयनात्मकता एवं कम ऊर्जा आवश्यकता को दर्शाते हैं। अध्ययन में कुल 23 स्वदेशी मत्स्याखेट उपकरणों का अभिलेखीकरण किया गया, जिनमें 14 मत्स्याखेट गियर तथा 9 मत्स्याखेट जाल शामिल थे। अध्ययन के दौरान पारंपरिक उपकरणों में परिवर्तन की प्रवृत्तियाँ भी देखी गईं, जिनमें प्राकृतिक निर्माण सामग्रियों के स्थान पर कृत्रिम सामग्रियों का बढ़ता उपयोग तथा श्रमसाध्य उपकरणों के प्रचलन में कमी शामिल है। इन परिवर्तनों के बावजूद, कम लागत, अनुकूलनशीलता तथा स्थानीय पारिस्थितिक परिस्थितियों के अनुकूल होने के कारण स्वदेशी मत्स्याखेट प्रणालियाँ आज भी व्यापक रूप से प्रचलित हैं। ऐसी पारंपरिक प्रथाओं को मत्स्य प्रबंधन की योजनाओं में समाहित करने से मत्स्य संसाधनों की सततता तथा मछुआरा समुदायों की आजीविका सुरक्षा को सुदृढ़ किया जा सकता है।

मुख्य शब्द: बाँस के मछली पकड़ने वाले फंदे, स्वदेशी मत्स्याखेट, अंतर्देशीय मत्स्यिकी, सततता, पारंपरिक ज्ञान